गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

Impact Factor : 4.553

ISSN : 2321-8037

मई 2023

Vol. 11, Issue 5

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण विशेषांक

विशेषांक संपादक :

डॉ. रीना अग्रवाल

संपादक :

डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

वर्ष : 11	अंक : 5	मई : 2023	आईएसएसएन : 2321-8037

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष डॉ. विश्वकीर्ति

संरक्षक :
हरविन्द्र कमल, पटियाला

मार्गदर्शन :
डॉ. राजेन्द्र गोदारा
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

इन्जीनियर सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन, सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्रेष्ठ चौधरी
सीनियर मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफफ इंडिया, साहिबजादा अजित सिंह नगर, मोहाली, पंजाब।

प्रधन सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी (हरियाणा)

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. रीना अग्रवाल
हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धरवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर (राजस्थान)

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

श्री हेमराज न्यौपाने
नेपाल।

ले. डॉ. एम. गीताश्री
डिप्टी डीन एकेडमिक
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
बीएमएस महिला कॉलेज, स्वायत्त,
बसवनगुडी, बेंगलुरु

प्रो. मधुबाला
राजकीय महिला महाविद्यालय,
हिसार।

प्रो. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
सहायक आचार्य भूगोल, एस.एन.डी.बी. राजकीय महाविद्यालय, नोहर, राज.

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
तोशाम (हरियाणा)

डॉ. राजेश शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. शिवकुमार
पत्राकारिता विभाग, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)

प्रो. कौशल्या कालोहिया,
पॅनसिल्वेनिया, यूएसए

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

कानूनी सलाहकार : **डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट, भिवानी**
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट, पटियाला।

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाउफसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

A Peer Reviewed International Refereed Journal

(Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

<u>*Disclaimer :*</u>

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Impact Factor : 2.636

ISSN : 2321-8037

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

तालिका– 2

शैक्षणिक/ शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसे: प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान/ अभियांत्रिकी/ कृषि/चिकित्सा/ पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा/ मानविकी/कला/ सामाजिक विज्ञान/ पुस्तकालय/शिक्षा/ शारीरिक शिक्षा/ वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त)		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्ताक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या/ पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या/ पाठ्यक्रम

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रीना अग्रवाल	7-10
2	मृदुला सिन्हा के साहित्य में लैंगिक असमानता : चिंतन, अवलोकन और चुनौतियाँ	डॉ. रीना अग्रवाल	11-14
3.	पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राष्ट्रवादी विचारों की प्रासंगिकता	पूजा अग्रवाल	15-18
4.	स्मृति काल में स्त्रियों की शिक्षा	सुनिता कुमारी	19-21
5.	गोस्वामी तुलसीदास : समन्वय के प्रबल प्रतिपादक	सुमन कुमारी	22-24
6.	IMPACTS OF WORKING CLASS IDEOLOGY ON NATIONAL MOVEMENTS	SARITA KUMARI	25-27
7.	आधुनिक भारत की राष्ट्रीय (नई) शिक्षा नीति 2020	ममता सुशील	28-32
8.	आधुनिकसंस्कृतकाव्येषु सीतायाः स्वाभिमानिता	करुणा गुप्ता	33-35
9.	पर्यावरण : कल, आज और कल	निधि माहेश्वरी	36-39
10.	IMPORTANCE OF YOGA DURING COVID-19	Dr. Pragya	40-45
11.	हिंदी कथा साहित्य में नारी के विविध रूप	रश्मि विश्वकर्मा	46-48
12.	नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव एवं मलिन बस्तियों की समस्या	R. D. Nirmala, Dr. Anuradha Pakalapati	49-52
13.	गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में चित्रित मानवीय आचार संहिता	नीता वर्मा	53-56
14.	डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य में राष्ट्रीय स्वाधीनता	शेजवल अरविंद, डॉ. अशोक जाधव	57-61
15.	फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में ग्रामीण एवं शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति	डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी	62-64

संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037
SANGAM
विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal Vol. 11, Issue 5
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक पृष्ठ : 49-52

नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव एवं मलिन बस्तियों की समस्या

R. D. Nirmala, Research Scholar,
Dr. ANURADHA PAKALAPATI, ASSISTANT PROFESSOR,
Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology & Advanced Studies (VISTAS)

भूमिका :-

भारत जैसी विशाल देश में भी मलिन बस्तियों की समस्याएँ होती है। हर एक मनुष्य के लिएतीन चीजोंकी आवश्यकताएँ होती है। खाना, कपड़ा और मकान, जीने के लिए खाना, पहनने के लिए कपड़ा और रहने के लिए मकान की आवश्यकता है। आजकल के मशीनी युग में हर कोई बहुत तेजी से चल रहे हैं। इस मशीनी युग में अब तक अनगिनत बदलाव हुए हैं। उद्योग के क्षेत्र में अब संगणक के बिना कोई कार्य नहीं चलता।इसी के कारणशरीर श्रम हुई और एक ही घंटों रहकर काम करने लगे। इसका असर स्वस्थ पर पड़ता। उद्योग के क्षेत्र में अब संगणक के बिना कोई कार्य नहीं चलता। सबको सेहत को बनाए रखना आवश्यक है। इस भागदौड़ में नब्बे प्रतिशत के लोगों की स्वास्थ्य बिगड़ जाते हैं।

''कोई हाथ भीं नहीं बढाएगा जो गले मिलोगे तपाक से
यह नए मिजाज के शहर है, जरा फसलो से मिला करो।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ बशीर बद्र के हैं। वे महानगर का अर्थ ऐसे बताते हैं कि मनुष्य को एक यंत्र की तरह नहीं, बल्कि मनुष्य तरह रहे।

महानगरों मेंरहने के स्थान स्वच्छ होना चाहिए मलिन बस्तियों में रहने वालों की स्थिति अति दयनीय है। लोग अपने जीवन को गुजारने के लिए काम की तलाश में दूसरे स्थान में आकर काम करता है। वह अपने काम का स्थान अपने रहने के स्थान के नजदीक में बसना चाहता है। वह काम के लिए अपना आवास स्थान ही बदलता है। वह अपने घर, उनकी कामकाजी स्थान के निकट मे बसाना चाहते हैं। इसलिए अपना आवास स्थान बदल लेते हैं।

इसलिए वह अपना जन्म स्थान छोड़कर दूसरे जगह में आकर रहने लगता है। गाँव के लोगों की बेरोजगारी के कारण नगरों में आकर बसते हैं। यहाँ रहने के लिए स्थान का अभाव है। भारत के जनसंख्या में कृषि व्यवसाय के अलावा पच्चहतर प्रतिशत के लोग अपने व्यापार या रोजगार के लिए शहरों में आते हैं। शहरों में आकर बस्ते हैं। नगर प्रवास में पहले पुरुषों की जनसंख्या अधिक मात्रा में होती थी। लेकिन आजकल महिलाएँ भी नगरों में आकर काम करने लगे है।

नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव :-

आजकल शहरों में बहुत बड़ा संयुक्त परिवार अभी एकल परिवार में बदल गए हैं। रिश्तेदारी कम होते जा रहे हैं। नगरों में लोगों के रहन-सहन, वेशभूषा, खानपान आदि में बहुत बदलाव आ गए हैं। यहाँ स्त्री-पुरुष सभी सामान है। ग्रामों की तुलना में नगरों की महिलाएँ के जीवन में अधिक बदलाव आ चुके हैं। सभी के सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक परिस्थितियों

में भी सुधार हुआ है। मलिन बस्तियाँ महानगरों का अंग है। नगरों में निम्न वर्ग के वर्गो को और बस्तियों में रहने वालों को सब तरह की सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती। वास्तव में बुनियादी जरूरतों की कमियाँ होती है। महानगरों की उन्नति के साथ-साथ मलिन बस्तियों की उन्नति भी अनिवार्य है होना भी चाहिए। आधुनिक महानगरों की सभ्यता, समाज की समस्याओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। मलिन बस्तियों की दुर्दशा उनकी आर्थिक, पारिवारिक सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ती जा रही है। गंदगी फैलने के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ अधिक उत्पन्न होती है। कम आय, पारिवारिक परिस्थितियाँ, जीवन जीने का नीचा स्तर, समुदाय की समस्याएँ, उनके रहन-सहन, दूषित वातावरण के कारण बीमारियाँ आसानी से फैलकर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को जन्म देकर जिंदगी और मौत के बीच में खड़ा कर देती है। इस स्थिति में मलिन बस्तियों का विकास दयनीय स्थिति में है।

नगरीकरण की समस्याएँ :-

आर्थिक समस्या :

आर्थिक समस्या के कारण भारत के ग्रामीण लोग अपने ग्रामीण क्षेत्रों को त्याग कर अपने जीवनयापन के लिए नगरों की ओर आकर्षित होकर चले आते हैं।गाँव से नगरों में आनेवाले ज्यादातर लोग गरीब होते हैं। अपने आप को सुरक्षित करने में वे असमर्थ हो जाते हैं। उनके पास सामाजिक सुरक्षा के लिए कोई साधन नहीं होते हैं। सामाजिक बीमा, सामाजिक सहायता, जन स्वास्थ्य संबंधी सुरक्षा का अभाव होता है।

निर्वाह साधनों का अभाव :

एक तरफ समाज के आर्थिक स्थिति सुधार होते जा रहा है। दूसरी तरफ वही घटते जा रही हैं। लोग गाँव छोड़कर नौकरी की तलाश में नगरों में आते हैं। गाँव के रोजगारी और शहर के रोजगारी में अंतर होता है। यहाँ के निवास स्थान की समस्या खड़ी होती है। अच्छा जीवन गुजारने के लिए पर्याप्त आर्थिक परिस्थिति ठीक ना होने के कारण गाँव से आए हुए लोग नगरों में मलिन बस्तियों में बस जाते हैं।

अत्यधिक नगरीकरण :

गाँव से अधिकांश लोग नगरों में आकर बसने लगे कि नगरो में रहने का स्थान की कमी होती जा रही है। नगर गाँव से आने वाले लोगों को अच्छी निवास स्थान देने में असमर्थ हो जाता है।

पर्यावरण की समस्या :

सरलता पूर्वक जीवनयापन करने में सहायता देने वाली प्रकृति की आवरणों में असंतुलन, कार्यालयों से निकलने वाले विषैले रसायनों के कारण होता है।

समुदाय के एकीकरण की समस्या :

नगरों के समाज में एकीकरण की समस्या हमेशा रहता है परिवार में हो या समाज में एकीकरण की अभाव रहता है।

मलिन बस्तियाँ :

गाँव से लोग काम की तलाश मे शहरों में आते हैं। वे लोग घर का किराया भी देने में असमर्थ हैं। इसलिए उनको झीलों, नदी के किनारे डेरा बनाकर रहते हैं। शहरों में झीलों के किनारे जहाँ शहरों की पूरी गंदगी होती वहीं पर परिवार का गुजारा करते हैं।

महानगरों में बढ़ता मलिन बस्तियों की समस्याएँ :-

नगरों में बढ़ती हुई आबादी के कारण आवास की समस्या बढ़ती जा रही है। मलिन बस्तियों की सुविधाएँ बहुत कम होते

है। मलिन बस्तियाँ महानगरों का अंग होने के कारण मलिन बस्तियों की उन्नति महानगरों के उन्नति के साथ-साथ हो रहा है। मलिन बस्तियों की अनेक समस्याएँ होती है जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत, शैक्षणिक औद्योगिक, प्रदूषण, परिवहन की समस्या, पेयजल की समस्या, शहरों के सड़कों पर गड्ढे की समस्या, बिजली, संचार, भीख, नशाबाजी, भ्रष्टाचार, बाल अपराध आदि। गंदे पानी को हटाने का प्रबंध, बच्चों कई लिए खेल का मैदन, मनोरंजन की सुविधाएँ की प्राप्ति आदि।

नगरों में बढ़ती हुई आबादी के कारण आवास की समस्या बढ़ती जा रही है। निम्न वर्गीय क्षेत्रों में गंदगी से दूषित सामान्य घरों में रहने वालों के लिए ही कम से कम पर्याप्त मात्रा में रकम की जरूरत होती है। मलिन बस्तियों में बुनियादी जरूरतें भी उपलब्ध नहीं होती। सफाई, स्वच्छता का अभाव होता, छोटे-छोटे झोपड़ियों में मजदूरी करने वाले रहते हैं। मलिन बस्तियों में रहने वाले अपने स्वच्छता और स्वास्थ्य पर लापरवाही दिखाते हैं।

रोजगार की समस्या :

बढ़ती हुई जनसंख्या आर्थिक स्थिति, अशिक्षित मजदूर, उद्योगों में तकनीक और मशीनीकरण आदि बेरोजगारी के कारण है। ग्रामों से नगरों में आए गाँव वालों को नगरों में काम की कमी होने के कारण जो भी काम मिलते हैं वे उसे अपना कर करते हैं। कृषि व्यवसाय को छोड़कर गाँव के लोग नहरों में आ कर बसते हैं।

आवास की समस्या :

जनसंख्या अधिक होने के कारण रहने के लिए स्थान उपलब्ध ने की है कृषि भूमियों पर मकान आवासीय अपार्टमेंट बना लिए। नगरों का विकास अति वेग से चलता है। इस तरह मलिन बस्तियों की स्थिति भी विकास की ओर बढ़ने की कोशिश करता है। लेकिन नगरों में किराये की रकम अधिक होता है। किराया बड़ी रकम होने के कारण सामान्य व्यक्ति घर नहीं ले सकते हैं। ग्राम उसे नगरों में आए गाँव वालों को नगरों में काम की कमी होने के कारण जो भी काम मिलते हैं वह अपना कर अपना जीवन चलाते हैं।

परिवहन की समस्या :

सामान्य रूप से एक जगह से दूसरी जगह जाना एक समस्या है भारत के महानगरों के भीड़ भाड़ में ट्रैफिक में जाना परेशानी की बात है। हमारे भारत की सड़कों की बुरी हाल लोगों को सही समय पर नहीं पहुँचता। निम्न वर्ग के और मलिन बस्तियों के लोगों को और भी मुश्किल होता है। व्यापार, व्यवसाय, काम के लिए जाते समय खराब सड़कें, अधिक वाहनों के वृद्धि, धीमी गति से चलने वाले वाहनों की संख्या, आदि। व्यापार का विस्तार परिवहन पर निभर है।

प्रदूषण :

महानगरों के कारखानों से निकलने वाले दूषित वायु दूषित जल अधिक मात्रा में गाड़ियों से निकलने वाले वायु वाहनों की संख्या अधिक होने के कारण ध्वनि संबंधी प्रदूषण उत्पन्न होती है। कारखानों से निकलने वाले दूशित जल नदी, नाले, झीलों में मिलकर पेयजल को दूषित करता है। जल प्रदूषण से सभी जीव जंतुओं को नष्ट पहुँचता है। कारखानों से निकलने वाले ध्वनी और वाहनों से निकलने वाले ध्वनि स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न करती है। प्रदूषण से पर्यावरण और आने वाले लोगों को बचाने हतु नदी, झीलें, नाले की सुरक्षा अनिवार्य है।

जलापूर्ति और पेयजल की समस्या :

मनुष्य को जल की आवश्यकता होती है। आदिकाल से अब तक मनुष्य नदी झीले आदि जलाशय के पास अपना निवास स्थान बनाया है। महानगरों की स्थापना जलाशयों के निकट की जाती रही है। ऐसे महानगरों में लोगों को पेयजल की समस्या होती है। पीने के पानी अब तक खरीद अब खरीदना पड़ता है क्योंकि इससे भूजल की सुरक्षा हो सकती है। महानगरों

में पेयजल कम मात्रा में मिलते हैं। अन्य काम करने के लिए कारा पानी ही मिलता है।

स्वास्थ्य सम्बंधि समस्या :

नगरों की जनसंख्याओं में स्वास्थय सम्बंधि समस्या उत्पन्नत होती है। पर्यावरण और पानी स्वच्छ न होने से अनेक बीमारियाँ फैलती हैं।

निष्कर्ष :-

मलिन बस्तियों में रहने वाले श्रमिकों को सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु उनको भवनों के निर्माण से उनको मुफ्त में घर बनकर दे, जल के नाली, पेयजल की व्यवस्था, दूषित जल से लोगों को भयंकर बीमारियों से बचाना, स्नान गृह, शौचालय की व्यवस्था, सीवेज और अपशिष्ट निपटान सुविधाओं, पाठशाला, बस्ती में रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य, औषधालय और चिकित्सा आदि बुनियादी जरूरतें मिलनी चाहिऐ। बिजली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होनी चाहिऐ। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों को और उनके बच्चों को पढ़ाई में उपयोगी हो। महामारियों से बचाने की योजना, अस्वास्थय कर खाना, शारीरिक दुर्बलता, औपचारिक आवास का निर्माण, हमारे भारत सरकार में मलिन बस्तियों के सुधार हेतु कार्यक्रम किए हैं। नगरों में रोजगार की अवसरों की व्यवस्था, बस्तियों के लोगों के बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था, ग्रामों का विकास, प्राकृतिक प्रकापों से बचने के लिए व्यवस्था, ग्रामों का विकास, प्राकृतिक प्रकापों से बचने के लिए व्यवस्था आदि। नये नगरों का निर्माण, राष्ट्रीय आवास नीति, नगरीय रोजगार कार्यक्रम, स्वर्ण जयंती की नजरों में रोजगार कार्यक्रम, नगरों में मलिन बस्तियों की आवास की योजना, अपराधों को रोकने, आदि सरकारों के द्वारा मलिन बस्तियों को सुधार और विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गोयल, डॉ. सुनील – नगरीय समाजशास्त्र, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, 2000
2. भारत में गंदी बस्तीयां एवं विकास, श्रीवास्तव नीरज 1994, जीवन पब्लिकेशन, आगरा।
3. बारबरा एस मेन्सच. भारत में एक शहरी मलिन बस्ती में एक आजीविका हस्तक्षेप का प्रभाव : व्यावसायिक परामर्श और प्रशिक्षण बदल कर नजरिए और व्यवहार किशोरियों की 2004 जनसंख्या परिषद, अंक
4. गंदी बस्तियों की समस्याएं, दुबे संजय 2007, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. अप्पा : टी. कानपुर में आवास एवं स्लम क्लीयरेंस सिविक मामला, फरवरी, 1974
6. प्रतियोगिता दर्पण, पत्रिका नवम्बर, 2013
7. लिन्थ्रेन, एच. सी. (1973) कक्षा अध्यापन में शिक्षा मनोविज्ञान, भोपाल : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
8. राजस्थान का भूगोल, प्रोफेसर एच. एस. शर्मा एवम प्रोफेसर आर. एन. मिश्रा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2013
9. आर. जोशी, नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2013
10. आर. जोशी, नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2013

Mail id: nirmalard03@gmail.com

Mobile: 8838272718

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Ref. No. : GDRI/S/ May/2023/1-22

Date : 31-05-2023

Certificate of Publication for paper titled*

नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव एवं मलिन बस्तियों की समस्या

Authored by

R. D. Nirmala, Research Scholar,
Dr. ANURADHA PAKALAPATI, ASSISTANT PROFESSOR,
Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology & Advanced Studies (VISTAS)

Pulished in **SANGAM** **ISSN : 2321-8037**

An International Peer Reviewed & Refeered Journal
Issue-11, Vol. 5, Page No. 49-52
Impact Factor 4.553

Rekha
Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secetary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://bohalshodhmanjusha.com/sangam
grngobwn@gmail.com

गीना प्रकाशन

संचालक : गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

प्रमाण-पत्र

R. D. Nirmala, Research Scholar,
Dr. ANURADHA PAKALAPATI, ASSISTANT PROFESSOR,
Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology & Advanced Studies (VISTAS)

को गीना प्रकाशन भिवानी (हरियाणा) द्वारा प्रकाशित

संगम ISSN : 2321-8037

अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका के मई 2023

अंक में रचनात्मक सहयोग प्रदान करने पर हम

डॉ. विश्वकीर्ति शोधश्री सम्मान

से सम्मानित करते हुए उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हैं।

क्रमांक GP/May/2023/1-22

दिनांक 31-05-2023

MRam
एम. राम
अध्यक्ष

बारुराम
बारुराम
कोषाध्यक्ष

नरेश सिहाग
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सम्पादक